श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः | जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष-2, अंक-45 | 15 जनवरी, 2021 | जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक | पृष्ठ-32 | मूल्य 5/- प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

तप का महत्त्व

तपस्या और ध्यान में पहली बात यह है कि मन और मस्तिष्क हल्का होना चाहिए। कल मस्तिष्क भारी था और आज हल्का समझना चाहिए कि आपको तप का लाभ मिला है। यह इस बात की परीक्षा है कि धर्म का आचरण हुआ या नहीं। यह थर्मामीटर की तरह एक मापक यंत्र के समान है। हमारे मस्तिष्क में हल्कापन आया, प्रसन्नता हुई है, प्रमोद आया है तो समझना चाहिए कि धर्म का स्वरूप आया है। जिसके लिए संचित कर्म, अन्तर के विकार तपकर-जलकर आत्म-प्रदेशों से पृथक् हो, उस क्रिया का नाम तप है। तप की परीक्षा क्या? तन तो मुर्झाया-सा लगे,पर मन हर्षित हो उठे। शरीर से ऐसा लगे कि शरीर तप रहा है, पर मन हर्ष से प्रफुल्लित हो उठे।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' से साभार

महामंत्री की कलम से

आदरणीय रत्नबन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

देव, गुरु धर्म के पुण्य प्रताप से आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., सरस व्याख्यानी, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, पीपाड़ में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। परम पूज्य गुरुदेव के पीपाड़ विराजने से पीपाड़वासियों को सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना का नियमित सुअवसर प्राप्त हो रहा है। सभी संत-सतीवृन्द विभिन्न क्षेत्रों को फरसते हुए श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना की प्रभावी प्रेरणा कर रहे हैं। जहाँ-जहाँ मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल का विचरण विहार चल रहा है, उन क्षेत्रों में रहने वाले गुरुभ्राताओं से निवेदन है कि आप कोरोना सम्बन्धी सरकारी गाईड लाइन का पालन करते हुए विचरण विहार के दौरान विहार सेवा का लाभ प्राप्त करें एवं महापुरुषों से आवश्यक मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त करें। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा संचालित गतिविधियों में सक्रियता के साथ भाग लें।

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक इतिहास मार्तण्ड, प्रातःस्मरणीय, परम पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. का 111 वां जन्म दिवस पौष शुक्ला चतुर्दशी, बुधवार, 27 जनवरी, 2021 को उपस्थित हो रहा है। गुरुदेव के कृपाप्रसाद से आप-हम सभी लाभान्वित हुए हैं, अतः इस पावन दिवस पर गुरुदेवके प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हुए पांच-पांच सामायिक की आराधना के साथ ही उपवास / आयंबिल / एकासन तप की साधना अवश्य करें।

आप सब को विदित ही है कि आचार्य हस्ती का दीक्षा शताब्दी वर्ष चल रहा है, जिसका समापन माघ शुक्ला द्वितीया, शनिवार, 13 फरवरी, 2021 को आचार्य भगवन्त के 101 वें दीक्षा-दिवस पर होगा। संघ एवं संघीय संस्थाओं द्वारा इस दीक्षा शताब्दी वर्ष में कई कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर कोरोना गाईड लाइन को ध्यान में रखते हुए तथा ऑन लाइन आयोजित किये गये। सभी गुरु भ्राताओं का इसमें सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। दीक्षा शताब्दी वर्ष में आवश्यक सूत्र पर आधारित खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन जनवरी-2021 में किया जाना था, परन्तु वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए इसे स्थगित किया गया है। परीक्षा की आगामी दिनांक शीघ्र ही सभी संघ सदस्यों को सूचित करने का प्रयास रहेगा। इस स्थगन से हम सभी को इस परीक्षा से स्वयं जुड़ने तथा सभी गुरु भ्राताओं को जोड़ने का सुअवसर प्राप्त होगा। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की सभी शाखाओं एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में इस परीक्षा हेतु पुरजोर प्रेरणा करावें।

आप-हम-सब संघ उन्नयन में सजगता एवं जागरुकता बनाये रखें, इसी मंगल मनीषा के साथ।

-धनपत सेठिया, राष्ट्रीय महामंत्री

विचरण विहार

(दिनांक 14.01.2021 की स्थिति)

☆ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7 श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन, पीपाड़ में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 साधना भवन, मण्डी रोड़, महावीर नगर, सवाईमाधोपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 उत्साह जैन विहार धाम, मैन हाईवे, गुताल, जिला-नदियाड़ (गुज.) में सुख-शान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 पालू गाँव, जिला-जयपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराज रहे हैं। अग्र विहार दूदू की ओर संभावित है।

☆ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 आदिनाथ जैन मंदिर, सिद्धरथ, जिला-सिरोही (राज.) में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 श्री महेन्द्रजी सुराणा के फुलका रेस्टोरेण्ट कार्यालय, एम्स हॉस्पिटल गेट नं. 4 के सामने, औद्योगिक क्षेत्र, जोधपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान है।

☆ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 13 श्री उत्तम स्वाध्याय भवन, 250-बी, गायत्री नगर, महारानी फार्म, सीडलिंग स्कूल के पीछे, जयपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 जैन स्थानक, महावीर कल्याण केन्द्र, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज (जिला-अजमेर) में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 जैन स्थानक, महावीर सोसायटी, धुलिया (महा.) में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 3 जैन स्थानक, पाटण गांव, जिला-भीलवाड़ा में सुख-शान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 स्वाध्याय भवन, गांव बारणी, तहसील-भोपालगढ़, जिला-जोधपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी के पास, अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 7 श्री सुरेशजी सालेचा का मकान, नं. 110, गुलाब नगर, खेमे का कुंआ रोड़, जोधपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 10 श्री एस. एस. जैन

स्थानक, 113/5, कालावैचेट्टी स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट, चेन्नई में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 श्री अजयजी मेहता का मकान, प्लॉट नं. सी-117, शिवाजी मार्ग, तिलक नगर, जयपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 जैन स्थानक, बड़नेरा, जिला-अमरावती में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 श्री महावीरचंदजी रांका का मकान नं. 7, 30-क्रॉस 5 मैन रोड़, चौथा ब्लॉक, जयनगर मेट्रो स्टेशन के सामने, बैंगलुरु (कर्नाटक) में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 श्री जैन हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, ए-51, गली नं. 6, होटल सरोवर पोट्रीको के सामने, नित्यानन्द नगर, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, मोती नगर, क्वीन्स रोड़ में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4, श्री सुनीलजी नाहर का मकान, 180-काशी बाग कॉलोनी, धार (मध्यप्रदेश) में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6, श्री एस. वी. एस. जैन भवन, लिटिल कांचीपुरम् (तमिलनाडु) में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4, जैन स्थानक, खापरगांव, जिला-नन्दूरबार में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3, जैन स्थानक, पल्लीवाल धर्मशाला के पास, खेरली, जिला-भरतपुर में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5, जैन स्थानक, नरडाणा गांव, जिला-धुलिया में सुख-शांतिपूर्वक विराजमान हैं। अग्रविहार शिरपुर की ओर संभावित है।

सभी संत-सती मण्डल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि है तथा विचरण विहार सुख-शांति पूर्वक चल रहा है।

पूज्य आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य से पुण्यधरा पीपाड़ हो रही धर्ममयी

पुण्यधरा पीपाड़ शहर का अहोभाग्य है कि रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ प्रवचन प्रभाकर, सामायिक, शीलव्रत, रात्रिभोजन त्याग एवं व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री

हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 श्रीमती शरद चन्द्रिका मोफतराज मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन पीपाड़ शहर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

अहिंसा नगरी कोसाणा का चातुर्मास पूर्ण कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. अपनी शिष्य मण्डली सहित ग्रामानुग्राम विहार कर, मध्य आने वाले क्षेत्रों को लाभान्वित करते हुए 09 दिसम्बर, 2020 को विहारकर प्रातः कटारिया की पोल, पीपाड़ शहर पधारे। वहाँ पर कुछ समय विराजने के पश्चात् विहार करके दोपहर को लगभग 3.15 बजे श्रीमती शरद चन्द्रिका मोफतराज मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन पीपाड़ पधारे। गुरुदेव के पीपाड़ पधारने से सभी संघ सदस्य बड़े उत्साहित नजर आ रहे थे। रत्नसंघीय श्रावकरत्न श्री रमेशचन्दजी बाघमार-पीपाड़ के स्वर्गवास होने पर उनका पूरा परिवार मंगलपाठ श्रवण एवं दर्शन-वंदन का लाभ लेने हेतु गुरु चरणों में उपस्थित हुआ।10 दिसम्बर को कटारिया की पोल के श्री राजारामजी कच्छवाहा ने पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। 11 दिसम्बर को दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र की वाचना प्रारम्भ हुई। वीरमाता श्रीमती मंजूजी जैन जयपुर से गुरुदेव के दर्शनार्थ उपस्थित हुई। इसी दिन शासनसेवा समिति के सदस्य श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल-चेन्नई एवं श्री नौरतनमलजी मेहता-जोधपुर ने गुरु चरण सन्निधि का लाभ लिया। 12 दिसम्बर को सवाईमाधोपुर से श्री राधेश्यामजी जैन 'गोटेवाला', अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष श्री कुशलजी जैन 'गोटेवाला', सवाईमाधोपुर संघ के अध्यक्ष श्री सुबाहूकुमारजी जैन एवं पूर्व अध्यक्ष श्री बाबूलालजी जैन शेखेकाल एवं पौष शुक्ला चतुर्दशी को मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा की विनती लेकर गुरु चरणों में उपस्थित हुए। श्री ज्ञानचन्दजी ओस्तवाल परिवार ने दर्शन-वंदन का लाभ लिया। भीलवाड़ा से कटारिया परिवार एवं विजयनगर से श्री भागचन्दजी सांड परिवार गुरुदेव के दर्शन-वंदन हेतु उपस्थित हुए।

13 दिसम्बर को संघ के महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया, उपाध्यक्ष श्री मनमोहनजी कर्णावट एवं जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा दर्शन वन्दन हेतु गुरु चरणों में उपस्थित हुए। शिवाजी नगर-मदनगंज से श्री भागचन्दजी कोटेचा परिवार ने गुरु चरणों में उपस्थित होकर दर्शन-वंदन का लाभ लिया। इसी दिन जयपुर से झामड़ परिवार गुरु चरणों में दर्शन-वंदन के लिए उपस्थित हुआ।

17 दिसम्बर को श्री चेतनमलजी नाहटा-ब्यावर ने गुरुदेव के मुखारविन्द से सदार शीलव्रत ग्रहण किया। बालकेश्वर-मुम्बई से प्रवीणजी मुणोत दर्शनार्थ गुरुचरणों में उपस्थित हुए। स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल-जोधपुर ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर स्वाध्यायी-प्रवृत्ति हेतु गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त किया। जयपुर से श्री ज्ञानचन्दजी सिंघवी परिवार, इलकल से सुरेशजी कटारिया परिवार, रणसीगांव वाले दर्शन-वंदन हेतु गुरु चरणों में उपस्थित हुए। 20 दिसम्बर, 2020 को चौपड़ा (महा.) संघ के पदाधिकारीगण चातुर्मास की विनति लेकर गुरु

चरण सन्निधि में उपस्थित हुए तथा अगला चातुर्मास महासतीजी का चौपड़ा में करवाने की भावना व्यक्त की। सामायिक संघ के संयोजक एवं स्वाध्याय संघ शाखा जयपुर के पूर्व संयोजक श्री राजेन्द्रजी पटवा-जयपुर के स्वर्गवास होने पर पटवा परिवार ने गुरु चरणों में उपस्थित होकर दर्शन-वंदन के साथ मांगलिक श्रवण का लाभ लिया। जयपुर से ही पधारे श्री करणराजजी कुम्भट ने गुरुदेव के मुखारविन्द से सदार शीलव्रत ग्रहण किया।

विहार समिति के उपाध्यक्ष श्री पारसमलजी गिड़िया-जोधपुर ने गुरु चरणों में उपस्थित होकर संत-सतीवृन्द के विहार सम्बन्धी आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। स्व. श्री त्रिलोकचन्दजी गोलेछा 'घी वाले'-जोधपुर परिवार की पुत्रवधू श्रीमती विद्याजी गोलेछा के स्वर्गवास होने पर गोलेछा परिवार गुरुचरणों में दर्शन-वंदन एवं मांगलिक श्रवण के लिए उपस्थित हुआ। चर्मरोग विशेषज्ञ डॉ. प्रफुल्लजी मेहता ने गुरुदेव के दर्शन-वंदन का लाभ लिया।

22 दिसम्बर को बैंगलोर से श्री सज्जनराजजी सांखला, हैदराबाद से वीरभ्राता श्री सज्जनराजजी गुगलिया, बैंगलोर संघ के अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता सपरिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आज ही के दिन दिल्ली-प्रीतमपुरा के प्रधान श्री सुरेशजी जैन, श्री मनीषजी जैन आदि विनती लेकर गुरुचरणों में उपस्थित हुए। वीरमाता श्रीमती ललिताजी धर्मसहायिका श्री प्रेमचन्दजी कवाड़ पुन्नमल्लै-चेन्नई से दर्शनार्थ उपस्थित हुई। 23 दिसम्बर को भोपालगढ़ से श्री सोहनलालजी बोथरा आदि श्रावकगण दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

24 दिसम्बर को दशाश्रुतस्कन्ध की वाचनी पूर्ण होने के पश्चात् बृहत्कल्प सूत्र की वाचनी प्रारम्भ हुई। हाउसिंग बोर्ड पाली से विकासजी चण्डालिया परिवार सहित एवं कुड़ी-जोधपुर से पुखराजजी जैन का परिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुआ।

25 दिसम्बर को जयपुर महावीर नगर से विनोदजी लोढ़ा परिवार, सिंघवी परिवार, मूसल परिवार, चोरडिया परिवार, बूरड़ परिवार के सदस्य एवं पाली तिलक नगर से नरेन्द्रजी बिरानी सपरिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

26 दिसम्बर को श्री माणकचन्दजी रांका के निधन होने पर अजमेर से रांका परिवार गुरु चरणों में दर्शन-वंदन एवं मांगलिक श्रवण के लिए उपस्थित हुआ। चंगलपेठ से गोलेच्छा परिवार, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पाली के अध्यक्ष श्री छगनलालजी लोढ़ा सपरिवार, चेन्नई से कर्नावट परिवार अरटिया वाले एवं निमाज के सूरजराजजी भण्डारी के सुपुत्र सपरिवार गुरु चरणों में दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

27 दिसम्बर को काचीपुरम्-भीलवाड़ा से श्री राजेन्द्रजी बिरानी, भैरूलाल जी जीरावला, पवनजी भण्डारी, बालोतरा से कोठारी परिवार, धुंधाड़ा से श्री पारसमलजी जैन, प्रतापनगर-जोधपुर से गणपतराजजी सिंघवी परिवार, पावटा-जोधपुर से सुराणा परिवार, ब्यावर से अध्यक्ष श्री प्रकाशजी मेहता सपरिवार, जयपुर से श्री उत्तमजी डागा की बहन का परिवार, जयपुर से श्री गौरव जी नवलखा, विजयनगर से पामेचा परिवार, जोधपुर से श्री हर्षवर्धनजी ललवाणी दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

28 दिसम्बर को जोधपुर से श्री अरुणजी मेहता एवं वैल्लूर, कुशालपुरा, बिरीठिया, पीपलिया आदि के श्रावकगण तथा वीरपिता श्री प्रेमचन्दजी कवाड़-पून्नमल्लै से, जोधपुर से श्री पुनवानचन्दजी ओस्तवाल परिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुआ।

29 दिसम्बर को रणसीगांव से श्री उगमराजजी चोरडिया, बारणी वाले श्री महेन्द्रजी नाहर-जोधपुर दर्शनार्थ उपस्थित हुए। 30 दिसम्बर को ब्यावर से वीरभ्राता श्री पदमचन्दजी कोठारी 'निमाज वाले' सपरिवार, भरतपुर से श्री ऋषभजी वैद्य, विजयनगर से खटोड़ परिवार, सांड परिवार एवं नाहर परिवार के सदस्य दर्शन-वंदन हेतु उपस्थित हुए। बैंगलोर से श्री निर्मलजी बम्ब, श्री यशवन्तजी छाजेड़, श्री अरिहन्तजी नाहटा, श्री मनोजजी रांका, चाकसू से झामड़ परिवार, सोजतरोड़ से श्री कुशालजी गुन्देचा सपरिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

31 दिसम्बर को पाली से श्री लाभचन्दजी, राजकुमारजी गोलेच्छा परिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुआ।

01 जनवरी, 2021 को जयपुर से श्री महेन्द्रजी पारख 'आई.ए.एस.' परिवार सहित पूज्य पिताश्री के स्वर्गवास होने पर दर्शन-वंदन एवं मांगलिक श्रवण हेतु गुरु चरणों में उपस्थित हुए। देई एवं गोटन संघ भी उपस्थित हुआ। पाली से नाहर परिवार, ब्यावर से संजय डोसी परिवार, जोधपुर से बाफना परिवार, खण्डाला से सचेती परिवार, जलगांव से श्री सुरेशजी बाफना परिवार सहित दर्शन-वंदन हेतु उपस्थित हुए।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की सांसारिक भाभीजी श्रीमती सूरजीदेवीजी आबड़ धर्मसहायिका श्री प्रकाशचन्दजी आबड़ के स्वर्गवास होने पर पलासनी से आबड़ परिवार गुरु चरणों में दर्शन-वंदन एवं मांगलिक श्रवण के लिए उपस्थित हुआ।

02 जनवरी जोधपुर से श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री नौरतन जी गिड़िया, श्री अरुणजी मेहता, बारणी से श्री लोकेशजी सिंघवी परिवार, मुम्बई विरार से श्री केवलचन्दजी सांड परिवार, बैंगलोर से श्री भीकमचन्दजी श्रीश्रीमाल, धुलिया से श्री कांतिलालजी चौधरी, माण्डल से वीरपिता श्री अशोकजी खिंवसरा, बोदवड़ से श्री कांतिलालजी गेलड़ा परिवार, नागपुर से श्री प्रकाशजी गेलड़ा, जालना से श्री विनोदजी बोहरा, धुंधाडा से श्री पंकजजी वैदमुथा, हिण्डौन से श्रावक-श्राविकागण दर्शन-वंदन हेतु उपस्थित हुए।

03 जनवरी को ब्यावर से अध्यक्ष श्री प्रकाशजी मेहता, श्री लक्ष्मीचन्दजी भण्डारी, श्री राजेन्द्रजी सुराणा, श्री नौरतनजी बोहरा, श्री मनीषजी मेहता चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। रत्नसंघीय स्व. श्री कैलाशमुनिजी म.सा. के सांसारिक भ्राता श्री राजकुमारजी सिंघवी के निधन होने पर सिंघवी परिवार जोधपुर-बारणी से दर्शन-वंदन एवं मांगलिक श्रवण हेतु उपस्थित हुआ। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शांतिलालजी चौपड़ा के निधन होने पर उनके सुपुत्र श्री तरुणजी, श्री सुनीलजी, श्री

राजेशजी चौपड़ा सपरिवार दर्शन-वंदन एवं मांगलिक श्रवण के लिए उपस्थित हुए। बालोतरा से श्री धर्मेशजी चौपड़ा परिवार, जोधपुर से वीरमाता श्रीमती लीलादेवीजी लोढ़ा एवं वीरभ्राता श्री अरविन्द जी लोढ़ा तथा नाड़सर से लोढ़ा परिवार गुरु चरणों में उपस्थित हुआ। श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्दजी गेलड़ा 'बोदवड़ वाले' नागपुर ने सदार शीलव्रत ग्रहण किया।

04 जनवरी रायचूर से मंत्री श्री पुन्याजी भण्डारी, जलगांव से श्री बंशीलालजी बोथरा परिवार गुरु चरणों में दर्शन-वंदन हेतु उपस्थित हुए। 05 जनवरी को चेन्नई युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मांगीलालजी चोरडिया, वीरभ्राता श्री वीरेन्द्रजी कांकरिया दर्शनार्थ उपस्थित हुए। 06 जनवरी को जयपुर से श्रीमती सुमनजी कोठारी सपरिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुई। 07 जनवरी को जयपुर से श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा परिवार सहित दर्शन-वंदन हेतु उपस्थित हुए। 08 जनवरी को जोधपुर से वीरपिता श्री इंदरचंदजी गांधी दर्शनार्थ उपस्थित हुए। इसी दिन श्राविका मण्डल पीपाड़ द्वारा बहिन बिन्दूजी की तपस्या के उपलक्ष्य में राता उपासरा में गुरु भक्ति का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लगभग 200 श्राविकाओं ने भाग लिया। 09 जनवरी को श्री जैनरत्न श्राविका मण्डल जोधपुर गुरु चरणों में जोधपुर संघ की विनति रखने एवं तपस्वी बहिन बिन्दू की तपस्या के अनुमोदनार्थ उपस्थित हुआ। 10 जनवरी को तपस्वी बहिन श्रीमती बिन्दूजी मेहता ने पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से 103 में 5 मिलाकर 108 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

पुण्यधरा पीपाड़ में आचार्यप्रवर आदि ठाणा के विराजने से धर्मध्यान का सुअवसर पीपाड़ वासियों को प्राप्त हो रहा है। प्रातःकाल श्रद्धेय श्री रविन्द्रमुनिजी म.सा. प्रार्थना करवाते हैं तत्पश्चात् महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. प्रवचन फरमा रहे हैं। दोपहर को व्यवहारसूत्र की वाचनी का कार्यक्रम चल रहा है। जिसमें महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आगम के गूढ़ अर्थ को सरल भाषा में समझा रहे हैं। सायंकालीन प्रतिक्रमण एवं रात्रिकालीन संवर की आराधना भी निरन्तर हो रही है। बाहर गांव से दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर जारी है। पीपाड़ संघ की आवास-निवास, भोजन व्यवस्था एवं आतिथ्य सत्कार सेवा अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। संघ के अध्यक्ष श्री श्रेणिकजी कटारिया, मंत्री श्री नमनजी मेहता, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अक्षयजी जैन एवं मंत्री श्री अखिलजी लुणावत सहित पूरी टीम सेवा में तत्पर रहती है।-गिरिराज जैन

सवाईमाधोपुर में नववर्ष का प्रारम्भ धर्माराधना के साथ

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 सवाईमाधोपुर चातुर्मासपरान्त उपनगरों को फरसते हुए धर्माराधना की सतत प्रेरणा कर रहे हैं। नववर्ष के अवसर पर आदर्शनगर में विराजते हुए मुनिमण्डल के सान्निध्य में सवाईमाधोपुर के आबालवृद्ध जनसमूह ने 21 नियम (जैसे- एक वर्ष तक भोजन में

जूठन नहीं छोड़ना, जयजिनेन्द्र से अभिवादन करना, माता-पिता को प्रणाम करना, सभी छोटे एवं बड़ों को जी लगाकर, आप लगाकर के पुकारना आदि आदि) ग्रहण करके अपने कदम धर्म संस्कार के मार्ग पर बढ़ा दिए। इस दिन श्रावक-श्राविकाओं ने तीन-तीन सामायिक-आराधना के साथ बड़े शान्त भाव एवं एकाग्रता के साथ प्रवचन श्रवण कर गुरुभक्ति का परिचय दिया।

जयपुर में ज्ञानाराधना–धर्माराधना का ठाट

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 चातुर्मासोपरान्त महावीर नगर से विहार कर जयपुर की कॉलोनियों को फरसते हुए ज्ञानाराधना की निरन्तर प्रेरणा कर रहे हैं। मुनिश्री के लालभवन विराजने पर 25 से 27 दिसम्बर तक युवक-युवतियों के लिए तीन दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इन तीनों दिवसों में आरोग्य, बोधि एवं समाधि विषय पर मुनिश्री का विशेष प्रवचन हुआ। नववर्ष पर प्रातः आठ बजे प्रार्थना एवं मांगलिक में श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ लिया। महारानी फार्म-जयपुर में संत-मण्डल के पधारने पर 07 से 09 जनवरी, 2021 तक आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रम में शक्ति, भक्ति एवं विरक्ति विषय पर संत-सती मण्डल के सारगर्भित प्रवचन हुए।-सुरेशचन्द कोठारी, मंत्री

तपस्या का लगा ठाठ, प्रत्याख्यान लिए एक सौ आठ

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की कृपा से मेहता परिवार की लाड़ली बिटिया श्रीमती बिन्दूजी मेहता सुपुत्री श्रीमती बीनाजी भागचन्दजी मेहता-जोधपुर ने आज दिनांक10 जनवरी, 2021 को गुरुदेव के मुखारविन्द से 103 में पांच मिलाकर 108 उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। बहन बिन्दूजी ने अहिंसा नगरी कोसाणा के चातुर्मासकाल में दिनांक 30 सितम्बर, 2020 को प्रथम उपवास कर तपस्या का शुभारम्भ किया। आपकी धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा एवं गुरु के प्रति निष्ठा एवं भावना में भक्ति के कारण ही आप धीरे-धीरे तपस्या में आगे बढ़ रही हैं। यह रत्नसंघ परिवार एवं मेहता परिवार के लिये गौरव की बात है। आपकी तपस्या में आपकी माताजी श्रीमती बीनाजी मेहता पिताजी श्री भागचन्दजी मेहता, भाई श्री बृजेशजी मेहता, बहन श्रीमती भावनाजी झामड़, बहनोई श्री अंकितजी झामड़-जयपुर एवं सुपुत्र मास्टर डूग्गूजी का अपूर्व सहयोग मिल रहा है। कोसाणा संघ एवं पीपाड़ संघ का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है तथा प्राप्त हो रहा है। पीपाड़ संघ से श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् एवं बालिका मण्डल के सभी सदस्यों का अपूर्व सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में बहन ने उत्कृष्ट भावों से तपस्या का शतक पूर्ण कर गुरु चरणों में श्रद्धा की भेंट समर्पित की। हम सभी रत्नसंघ परिवार की ओर से तपस्वी बहन की सुख साता की पृच्छा करते हैं तथा तपस्या की खूब-खूब अनुमोदना करते हैं।

-धनपत सेठिया, महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा लेख प्रतियोगिता का आयोजन

प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सभी के लिए लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता का विषय है- **गुरु हस्ती द्वारा प्रदत्त अनमोल संदेश ''सामायिक–स्वाध्याय'' का अपने जीवन में अनुभव।** उपरोक्त विषय पर आप अपना हस्तलिखित लेख अधिकतम 1500 शब्दों में 10 फरवरी, 2021 से पूर्व अग्रांकित पतों पर प्रेषित करावें। लेख प्रेषित करते समय प्रतिभागी अपना नाम, पता एवं मोबाइल नम्बर अवश्य अंकित करें। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को 2500/-, द्वितीय स्थान पर 1500/-, तृतीय स्थान पर 1100/-, चतुर्थ स्थान पर 900/-, पंचम स्थान पर 700/- तथा 10 प्रोत्साहन पुरस्कार 250/- प्रत्येक को प्रदान किये जायेंगे। सर्वश्रेष्ठ लेख को जिनवाणी में प्रकाशित किया जायेगा। लेख भेजने का पता- 1. श्रीमती विजया राजेन्द्र जी मल्लारा, रत्नसागर-491-ए, चर्च के सामने, प्लॉट नं. 4, कलेक्टर बंगला रोड़, जलगांव-425001 (महा.), मो. 94040-55505, 2. डॉ. तारा जी डागा, 5 झ 33, जवाहर नगर, जयपुर-302004 (राज.), मो. 93512-50238। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:- 1. श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बैंगलुरु, अध्यक्ष-93426-77066, 2. श्रीमती अलका दूधेड़िया, अजमेर, महासचिव-98281-56250

'आत्मशुद्धि का साधन प्रतिक्रमण' चतुर्थ निबंध प्रतियोगिता का परिणाम

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा आचार्य हस्ती शताब्दी वर्ष एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयंती वर्ष पर आयोजित चर्तुथ निबंध प्रतियोगिता **'आत्मशुद्धि का साधन प्रतिक्रमण'** विषय पर आयोजित की गई, जिसमें जोधपुर से 7 ,महाराष्ट्र से 13, जयपुर से 7, पोरवाल से 11, पल्लीवाल से 2, मारवाड़ से 8 तथा अन्य क्षेत्रों से 12 सहित कुल 60 स्वाध्यायी भाई-बहिनों, श्राविक-श्राविकाओं ने उत्साह से भाग लिया। इस निबंध प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है:- 1. श्री हेमन्त जी डागा-जयपुर (प्रथम), 2. श्रीमती नवीना जी जैन-हुबली (द्वितीय), 3. श्री अनिलकुमारजी जैन-कोटा (तृतीय)। सांत्वना पुरस्कार इस प्रकार हैं- 1. सौ. मधुबाला जी ओस्तवाल-नाशिक, 2. प्रियंका जी चौपड़ा-अजमेर, 3. स्नेहलताजी जैन- अहमदनगर, 4. मीनाक्षी जी चौपड़ा-अजमेर, 5. प्रिया जी सुराणा-मदनगंज, 6. कविना जी जैन-जयपुर, 7. नाथुलाल जी जैन-अजमेर, 8. सुषमाजी सिंघवी-जोधपुर, 9. ज्योति जी जैन-बारां, 10. सेहल जी जैन-जयपुर, 11. राजमल जी संचेती-अमलनेर।-सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

आवश्यक सूत्र आगम की परीक्षा स्थगित

युगमनीषी, इतिहास मार्तण्ड, स्वाध्याय-सामायिक के प्रबल प्रेरक, अध्यात्म

योगी, आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आवश्यक सूत्र आगम की खुली किताब लिखित परीक्षा 24 जनवरी-2021 को आयोजित करने का निर्णय लिया गया था, किन्तु कोरोना महामारी के कारण विगत 9 माह से विश्वव्यापी संकट फैला हुआ है। इस महामारी के बढ़ते हुए प्रकोप को तथा सरकारी गाइडलाईन को देखते हुए 24 जनवरी-2021 को आवश्यक सूत्र की खुली किताब लिखित परीक्षा व्यवस्थित रूप से आयोजित करना संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए अभी यह परीक्षा स्थगित की जा रही है।

आगे जिस रूप में सरकारी गाईडलाइन प्राप्त होगी, कोरोना का प्रभाव कम होगा, उसे ध्यान में रखते हुए आवश्यक सूत्र की आगामी परीक्षा की निश्चित दिनांक, 15 फरवरी-2021 तक सूचित कर दी जायेगी।

सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक भाई-बहिनों को उक्त परीक्षा में भाग लेने हेतु प्रेरित करने का कार्य निरन्तर जारी रखावें। अभी तक जिन क्षेत्रों से तथा जिन भाई-बहिनों से सम्पर्क नहीं हो पाया है, उनसे सम्पर्क कर उन्हें इस परीक्षा में भाग लेने हेतु प्रेरित करने की कृपा करावें। सभी परीक्षार्थियों से निवेदन है कि वे अपनी परीक्षा की तैयारी जारी रखें, उसमें किसी प्रकार की शिथिलता न आने दें।-सुभाषचन्द नाहर, सचिव

बैंगलोर में निवासरत रत्नसंघीय बंधुओं/बहिनों से निवेदन

इतिहास पुरुष आचार्य श्री हस्ती, आगमज्ञ आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के प्रति समर्पित रत्नबन्धु जो जयपुर, सवाईमाधोपुर, जोधपुर अथवा राजस्थान के किसी भी क्षेत्र से आकर बैंगलोर महानगर में अपना व्यवसाय, जॉब कार्य करते हैं एवं निवास करते हैं कृपया वे सभी नये बंधुगण रत्नसंघ कर्नाटक-बैंगलोर से जुड़ने के लिए अपना नाम, पता, फोन नम्बर इत्यादि संघ अध्यक्ष, संघमंत्री या स्वाध्याय भवन, राजाजीनगर में अवश्य लिखवावें, ताकि आपको रत्नसंघीय गतिविधियों से जोड़ा जा सके। सम्पर्कः- 1. पदमराज मेहता, अध्यक्ष-99001-62517, 2. गौतमचन्द ओस्तवाल, मंत्री-94481-80661-गौतमचन्द ओस्तवाल, संघमंत्री

संघ की सहयोगी संस्थाओं के संक्षिप्त प्रतिवेदन

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

जिनवाणी की पावन गंगा के प्रचार-प्रसार में संलग्न सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की प्रमुख गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण आप सभी प्रबुद्ध श्रावक एवं श्राविकाओं के समक्ष प्रस्तुत हैः-

☆ वर्तमान में जिनवाणी पत्रिका के स्तम्भ सदस्य 210, संरक्षक सदस्य 119 हैं। इस पत्रिका के आजीवन सदस्य 16167 भारत में तथा 140 विदेश में हैं, त्रिवार्षिक सदस्य 60 हैं तथा यह पत्रिका लगभग 230 विभिन्न लेखकों, विभागों एवं संस्थाओं को परिवर्तनार्थ, प्रचारार्थ निःशुल्क प्रेषित की जा रही है।

☆ गतवर्ष 28 सितम्बर, 2019 को पाली में आयोजित कार्यकारिणी की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार इस वर्ष जिनवाणी के श्वेत-श्याम विज्ञापनों को बन्द कर

एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले लाभार्थी सदस्य बनाए जा रहे हैं। ऐसे महानुभावों द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री एक माह रंगीन पृष्ठ में प्रकाशित की जा रही है तथा वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख किये जाने का प्रावधान रखा गया है।

☆ जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के साहित्य को वेबसाइट (www.jinwani.in <http://www.jinwani.in> पर Books <http://www.jinwani.in> & Magzines) पर भी उपलब्ध करा दिया गया है। जिनवाणी नियमित रूप से रत्नसंघ एप्प पर 10-11 तारीख को अपलोड कर दी जाती है, अतः आप वेबसाइट पर भी इसे देख एवं पढ़ सकते हैं।

☆ अध्यात्म योगी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर जिनवाणी का 'जैन जीवन-शैली' विशेषाङ्क प्रकाशित किया गया है।

☆ सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के उद्देश्यों में सत्साहित्य का प्रकाशन करना भी एक प्रमुख कार्य है। इस वर्ष मण्डल द्वारा निम्नलिखित पुस्तकों का नवीन प्रकाशन किया गया है :- 1. आचारांगसूत्र की अनुप्रेक्षा, 2. क्यों जरूरी?, 3. आचार्य श्री हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमान।

☆ 1. श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र (25वाँ सं.), 2. 25 बोल विवचेन सहित, 3. भक्तामर स्तोत्र, 4. प्रतिक्रमणसूत्र (मूल), 5. सामायिक साधना और स्वाध्याय, 6. उत्तराध्ययन सूत्र भाग-1, 7. आवश्यकसूत्र (दो संस्करण) इन पुस्तकों का पुर्नमुद्रण किया गया है।

☆ आगामी वर्ष में निम्नांकित नूतन साहित्य के प्रकाशन की योजना है- 1. सुपुण्यशाली की उपजे धर्म में मति, 2. स्वस्थ एवं साधक-जीवन के लिए आहार, 3. जीवन की नई कहानियाँ, 4. बाल-कविताएँ एवं भजन, 5. जिज्ञासा-समाधान (भाग-2), 6. दान के विविध आयाम, 7. कषाय-विजय, 8. सुभावितम्।

☆ आगामी वर्ष में मण्डल द्वारा निम्नलिखित पुस्तकों का पुनः मुद्रण किया जाना है:- 1. शास्त्र-स्वाध्याय माला, 2. देशबन्ध सर्वबन्ध का थोकड़ा, 3. गुणस्थान स्वरूप, 4. लघुदण्डक, 5. नियंठा संजया का थोकड़ा, 6. दशवैकालिक सूत्र।

☆ इस वर्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्राचीन पुस्तकों एवं जिनवाणी मासिक पत्रिका के सभी प्राचीन अङ्कों तथा विशेषाङ्कों को डिजिटलाइज कराने का कार्य प्रारम्भ किया गया है।

☆ अध्यात्मयोगी, युगमनीषी पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आचार्य श्री हस्ती-स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन करने का निर्णय लिया गया था। इसके अन्तर्गत 23 फरवरी, 2020 को जयपुर में प्रथम व्याख्यान माला का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त प्रोफेसर एस. आर. भट्ट जी ने तथा जोधपुर विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त प्रोफेसर दयानन्दजी भार्गव ने 'आचार्य श्री हस्ती के चिन्तन में आधुनिक समस्याओं के समाधान' विषय पर व्याख्यान दिये।

☆ प्रथम ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन 07 जून, 2020 को पद्मभूषण संघ संरक्षक डॉ. डी. आर. मेहता सा, जयपुर एवं संघ संरक्षक श्रावकरत्न श्री विमलचन्दजी डागा, जयपुर ने 'अध्यात्मयोगी आचार्य श्री हस्ती : प्रेरक साधनामय जीवन एवं दुर्लभ प्रसङ्ग' विषय पर सम्बोधित किया। इसके पश्चात् 05 जुलाई, 2020 को 'युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती की इतिहास दृष्टि एवं गुणनिष्ठा' विषय पर पूर्व राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, जोधपुर ने इतिहास की प्रेरक घटनाओं से परिचित करवाया। 09 अगस्त, 2020 को संघ संरक्षक पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, जयपुर ने 'व्यक्तित्व-विकास और सामाजिक समस्याओं के समाधान में स्वाध्याय तथा सामायिक की भूमिका' विषय पर प्रेरक उद्बोधन दिया। इसी शृङ्खला में 06 सितम्बर, 2020 को संघसेवा शिरोमणि संघ संरक्षक श्री मोफतराज पी. मुणोतजी ने 'युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती की दृष्टि सम्पन्नता एवं मेरे जीवन पर प्रभाव' विषय पर सम्बोधित करते हुए आचार्य श्री हस्ती की दृष्टि सम्पन्नता तथा अपने जीवन से जुड़ी घटनाओं एवं प्रसङ्गों से परिचित कराया। 04 अक्टूबर, 2020 को आयोजित पंचम वेबिनार व्याख्यान माला में पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी श्रद्धानिष्ठ श्री रणजीतसिंहजी कूमट, मुम्बई ने 'वीतराग ध्यान और कषाय-विजय' पर प्रेरक उद्बोधन दिया।

☆ गतवर्ष 1-2 अक्टूबर, 2019 को आचार्यप्रवर के सान्निध्य में सुराणा मार्केट, पाली में 'दान के विविध रूप' विषय पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी आयोजित की गई।

☆ मण्डल द्वारा मानसरोवर कॉलोनी जयपुर में राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवंटित 537.5 वर्गमीटर के भूखण्ड पर नवनिर्मित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान का निरन्तर संचालन किया जा रहा है। इसके संचालन हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा 25,000/- का अर्थसहयोग प्रदान करने की योजना बनाई गई थी, जिसमें 12 महानुभावों से राशि प्राप्त हुई थी। इस वर्ष भी आप सबसे सहयोग की अपेक्षा है।-अशोक कुमार सेठ-मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

☆ श्राविकाओं को स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा करने के साथ श्राविकाओं, बालिकाओं व नवयुवतियों को शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में भाग लेने हेतु प्रेरणा करने तथा श्रावक-श्राविकाओं में ज्ञानाभ्यास तथा बालक-बालिकाओं में संस्कार की अभिवृद्धि के लिए श्राविका मण्डल विशेष रुप से सक्रिय हैं।

☆ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की देश भर में वर्तमान में 78 शाखाएँ व सम्पर्क सूत्र संचालित हैं। नंदुरबार तथा कजगांव में इस वर्ष नई शाखाओं का गठन किया गया।

☆ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा श्राविकाओं तथा बालिकाओं में ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु आध्यात्मिक चेतना आयाम शिविर का आयोजन किया जाता है। जिसमें शिविरार्थियों को ''स्वयं के गुण-दोष को कैसे प्रकट करे।''

''जीवन में आगे बढ़ने'' का एक नया तरीका एवं जीवन में आगे बढ़ने के लिए ''स्वयं की क्षमता को पहचानने आदि का अध्यापन एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

☆ श्राविका मण्डल द्वारा आगम स्वाध्याय अनुष्ठान रूप बने आगम अध्येता योजना प्रारम्भ की गई, जिसमें श्रावक-श्राविका रूचि पूर्वक भाग ले रहे हैं। अब तक दशवैकालिक, उपासकदशांग, नन्दीसूत्र, अन्तगड़सूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र (भाग 1 से 3) तक तथा इन पांचों आगमों की एक संयुक्त परीक्षा पंचागम की प्रतियोगिता के आयोजन के पश्चात् सामायिक दर्शन प्रतियोगिता आयोजित की जा चुकी है।

☆ परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर रविवार दिनांक 19 जुलाई 2020 को ''महिला सशक्तिकरण व श्राविका उत्थान के प्रणेता : गुरु हस्ती'' विषय पर श्राविका मण्डल द्वारा ऑनलाइन वेबिनार आयोजित की गई। प्रमुख वक्ता डॉ. सुषमाजी सिंघवी ने उपर्युक्त विषय पर अपना उद्बोधन दिया।

☆ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की 24 सितम्बर 1994 को स्थापना हुई, जिसके 25 वर्ष पूर्ण हुए और दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में श्राविका मण्डल द्वारा दिनांक 24 सितम्बर 2020 को वेबीनार आयोजित कर श्राविका गौरव दिवस और श्राविका संस्कार दिवस मनाया गया। जिसमें प्रमुख वक्ता श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष डॉ. मंजुलाजी बम्ब-जयपुर थे।

☆ संस्कारों की वृद्धि के लिए संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण की प्रेरणा के साथ ज्ञानाभ्यास वृद्धि हेतु संत-सतीवृन्द के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी के तहत विभिन्न शाखाओं द्वारा अलग-अलग धार्मिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

☆ महापुरुषों के जन्म दिवस, पुण्य दिवस के अवसर पर विशेष रूप से त्याग-तप, दया-संवर आदि अनुष्ठानों में सभी शाखाओं की श्राविकाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

☆ श्राविका मण्डल की शाखाओं में प्रतिक्रमण का अर्थ, बारह भावना, बारह व्रत व पच्चीस बोल, भक्तामर आदि का अभ्यास श्राविकाओं को करवाया गया है।

☆ समाज में फैली कुरीतियों के निवारण में हम-बहिनों का योगदान कम नहीं है। व्यसन और फैशन से दूर रहने की निरन्तर और प्रभावी प्रेरणा हमारे धर्माचार्य-धर्मगुरु और संत-सतीवृन्द करते हैं, हम श्राविकाएं प्राप्त प्रेरणा का घर-घर संचरण करती हैं। व्यसन से प्रायः बहिनें दूर हैं फैशन से भी वैसी दूरी बनी रहे, इस लक्ष्य की प्राप्ति में हम सक्रिय हैं। दहेज प्रथा और भ्रूण-हत्या रोकने में भी हमारे प्रयास कारगर हो रहे हैं। पशु-पक्षी, जीव-दया सेवा में भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हुए सभी को प्रेरणा भी कर रही है। श्राविकाओं ने सहकार, सहयोग, सम्बल प्रकोष्ठ कार्यक्रम हाथ में लिया है। इस कार्यक्रम में सभी से

निवेदन किया गया घर में ऐसी कई सामग्री है जो उपयोग में नहीं आ रही है, वे वस्तुएं जरूरतमंदों को प्रदान कर सहयोग कर सकते हैं। बच्चों की स्कूल ड्रेस, फीस, कपड़े खाद्य सामग्री आदि। आपके सहयोग से उस परिवार को सम्बल प्राप्त होगा। यह कार्यक्रम लगभग सभी शाखाओं में चल रहा है।

☆ स्वधर्मी वात्सल्य सेवा हेतु श्राविका मण्डल निरन्तर प्रयासरत है। श्राविका मण्डल के सदस्यों द्वारा व्यक्तिशः बच्चों को स्कूल फीस, ड्रेस तथा औषधोपचार आदि में सहयोग प्रदान किया जा रहा है, साथ ही युवक परिषद् द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत अर्थ सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

☆ श्राविका मण्डल के केन्द्रीय पदाधिकारियों द्वारा शाखाओं का प्रवास करके शाखा में चलने वाली गतिविधियों की प्रगति की जानकारी ली गई एवं श्राविका मण्डल द्वारा संचालित राष्ट्रीय अभियानों की सफलता के लिए प्रेरणा की गई।

☆ चतुर्विध संघ-सेवा एवं सन्त-सतीवृन्द की विहार सेवा तथा संघ द्वारा आयोज्य धार्मिक कार्यक्रमों, महोत्सवों आदि को सफल बनाने में निरन्तर श्राविकाएँ अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही है।

☆ श्राविका मण्डल की स्थानीय शाखाओं द्वारा अपनी-अपनी शाखा में साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है।

-अलका दुधेडिया, महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

संघ की युवा ईकाई के रूप में कार्यरत युवक परिषद् ने सदैव अपने पूज्य गुरु भगवंतों की दूरगामी सोच एवं उनकी प्रेरणा को सजीव किया है। युवक परिषद् अपने मूल उदेश्यों के अनुरुप तो कार्यक्रम कर ही रहा है और हर्ष का विषय तो यह है कि समय-समय पर उसमें नये-नये कार्यक्रम जुडते जा रहे हैं। विगत एक वर्ष में परिषद् द्वारा जो कार्यक्रम किये गये उनका विवरण यहाँ दिया जा रहा है:-

☆ वर्तमान कार्यकारिणी ने प्रतिवर्ष कम से कम 2 सिंघाड़ों के दर्शन एवं वंदन एवं सेवा का लक्ष्य सभी कार्यकर्त्ताओं को दिया। इसी क्रम में विगत वर्ष संत-सतीवृन्द के चातुर्मासिक दर्शन-वन्दन हेतु 21-22 अक्टूबर, 2019 को संघ के शीर्षस्थ पदाधिकारियों के साथ महाराष्ट्र में प्रवास कार्यक्रम किया गया। 10 से 12 नवम्बर, 2019 को कर्नाटक एवं गुजरात क्षेत्र में दर्शन-वंदन कार्यक्रम रखा गया।

☆ परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 57 वां दीक्षा-दिवस 02 नवम्बर, 2019 को सामूहिक एकाशन-दिवस के रूप में पूरे देश में तप, त्याग एवं तपस्याओं के माध्यम से मनाया गया।

☆ इस वर्ष 10 वीं एवं 12 वीं की परीक्षाओं में 85 प्रतिशत अंकों एवं उससे अधिक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम करने की योजना युवक परिषद् लेकर आया है। इस हेतु हमें कुल 87 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई।उन सभी को विशेष प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्रेषित किए जा रहे हैं।

☆ इस वर्ष विशिष्ट प्रयासों के चलते युवक परिषद् ने अपने संगठन का विस्तार किया है। युवक परिषद् के संगठन स्तर पर शाखा एवं सम्पर्क सूत्र जो 68 थे, वे बढ़कर अब 141 हो गए हैं। वैश्विक मानचित्र पर भारत के अलावा, यू.ए.ई. में दुबई एवं आबूधाबी में, यू.एस.ए., यू.के., सऊदी अरब, बेल्जियम, चायना, बैंकॉक, हॉगकॉग, डेनमार्क आदि देशों में भी युवक परिषद् की उपस्थिति दर्ज हो गई है।

☆ परम प्रतापी पूज्य गुरुवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सदैव प्रेरणा जमीकंद एवं रात्रिभोजन त्याग की रहती है। इसके चलते हमने गुरु वचनों के आदर एवं समर्पण की कड़ी में प्रत्येक पूनम (पूर्णिमा) को जमीकंद एवं रात्रिभोजन के त्याग की प्रेरणा गत वर्ष की भांति जारी रखी है।

☆ इस वर्ष पूज्य गुरुदेव 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की दीक्षा शताब्दी मनाने का जो हमें सुअवसर मिला है उसे उनके प्रभावी सूत्र ''सामायिक-स्वाध्याय'' को जीकर मनाने स्वरूप संघ ने सामायिक-प्रतिक्रमण शुद्धि के अभियान का बीड़ा उठाया है। विभिन्न माध्यमों से प्रचार करके अब तक लगभग 5000 से अधिक लोगों को इससे जोड़ा है। सभी को प्रभावी प्रेरणा की जा रही है कि अपना-अपना याद किया हुआ सम्पूर्ण सामायिक प्रतिक्रमण सम्बन्धी पाटियों का पाठ्यक्रम शुद्ध करें एवं उनका अर्थ सीखकर उनमें भाव लाए। विधि सीखकर उसे प्रभावी बनाए। पाठ्यक्रम को भी आयु के अनुसार तीन वर्गों में तथा 4 कक्षाओं में बांटकर इसको सर्वग्राही बनाने का प्रयास किया है। इसमें प्रतिभागियों के पाठ के शुद्ध उच्चारण, विधि एवं अर्थ के आधार पर मूल्यांकन करके विभिन्न पुरस्कारों द्वारा उत्साहवर्द्धन करने की योजना है।

☆ गत वर्ष में बहन सुश्री दीपिकाजी मुणोत एवं सुश्री निमिषाजी लुणावत की जैन भागवती दीक्षा के प्रसंग पर जयपुर एवं जलगांव में उपस्थित होकर युवक परिषद् के सदस्यों द्वारा वरघोड़े एवं दीक्षा के सभी कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति एवं सहभागिता दर्ज करायी गई।

☆ अपने रत्नसंघीय परिवारों का डाटा एप्प के माध्यम से एकत्र करने का विशिष्ट अभियान चला रखा है। जनवरी-2019 से अब तक इस एप्प के माध्यम से 4250 नई प्रविष्टियाँ दर्ज करवायी है एवं आगे भी प्रयास रहेंगे। अब एप्प पर वर्तमान में लगभग 21000 प्रविष्टियाँ हैं।

☆ वैश्विक महामारी कोरोना काल के चलते हमको सरकारी एवं संघीय निर्देशों का पालन करते हुए आपसी दूरी बनाए रखने की, स्थानकों में नहीं जाने आदि की घोषणाएँ करनी पड़ी। हमारे संत-सतीवृन्द ही हमारे लिए सब कुछ है अतः उनका ख्याल, सेवा,सुरक्षा शीर्ष पर रहती है। एतदर्थ युवक परिषद् ने अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् निर्वहन किया और स्वयं की अपनी इच्छा ना होते हुए भी व्यवस्थित संत-सतियों की सन्निधि से अपने आपको दूर रखकर उन्हें सुरक्षित भी किया। साथ ही सीमित संख्या में पूर्ण अनुशासन के साथ समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर आवश्यकतानुसार विहार सेवा, गोचरी सेवा आदि में पूर्ण सहयोग किया।

☆ लॉकडाउन के चलते सभी श्रावक-श्राविकाओं ने अपना सम्पूर्ण समय अपने परिवारों के साथ गुजारा। जहाँ भौतिकता के चलते लोगों ने मनोरंजन के साधनों के साथ अपना वक्त गुजारा वहीं हमारे युवा साथियों ने अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ सामूहिक प्रार्थना के गुरु के आह्वान को ध्यान में रखकर इसे अपनाया।

☆ लॉकडाउन में युवाओं ने बढ़ चढ़कर अपेक्षित एवं अभावग्रस्त जैन परिवारों को घर-घर जाकर ढूंढा एवं उनकी मदद की।

☆ भगवान महावीर की मुक्ति पथ की यात्रा की शुरुआत नयसार के भव में आहार दान से शुरू हुई थी। ज्यादातर मुक्ति पथिकों की भी यात्रा की शुरुआत दान से ही बताई गई है। संकट के इस काल में युवाओं ने अपनी परिग्रह की प्रवृत्ति को छोड़कर समय की मांग के अनुसार विभिन्न तरीकों से दान दिया। युवाओं ने प्रधानमंत्री राहत कोष, मुख्यमंत्री राहत कोष एवं अन्य सेवा संस्थाओं तक ही अपनी भावना को सीमित नहीं रखा, अपितु प्रत्यक्षतः जरूरतमंदों के घर-घर जाकर मदद करने में भी पीछे नहीं रहे। युवाओं ने कच्चा राशन ही नहीं अपितु प्रतिदिन भोजन आदि बनाकर भी जरूरतमंदों को वितरित कर स्वधर्मी वात्सल्य एवं मानवता की सेवा की अनूठी मिसाल दी।

☆ कोरोना काल में भी युवकों ने युवक परिषद् के मुख्य कार्यक्रम के अनुरूप विहार सेवा को भी प्राथमिकता दी और इस सेवा को भी बाधित नहीं होने दिया। जहाँ कहीं भी उनकी आवश्यकता थी, विहार हो रहे थे, उसमें युवाशक्ति पूर्णरूप से समर्पण भाव से लगी रही। इनमें चाहे वह महाराष्ट्र, राजस्थान अथवा कर्नाटक क्षेत्र के विहार थे। लम्बी से लम्बी विहार सेवा में भी युवाओं ने पूर्ण उत्साह से भाग लेकर कर्म निर्जरा की।

☆ परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा दिवस 26 जनवरी, 2020 को संघ ने सामायिक दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया तो युवक परिषद् ने सम्पूर्ण विश्व में इसकी प्रबल प्रभावना की। इसका सुखद परिणाम था कि प्राप्त जानकारी के अनुसार लगभग 6000 लोग उस दिन सामूहिक सामायिक आराधन के इस अभियान से जुड़े।

☆ गुरु भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 29 वां पुण्य स्मृति दिवस प्रार्थना दिवस के रूप में मनाया गया। सम्पूर्ण देश में आह्वान किया गया कि एक ही समय पर ही पारिवारिक सामूहिक प्रार्थना करने का लक्ष्य रखा गया, परिणामस्वरूप हमने सभी से सामूहिक प्रार्थना के पश्चात् अपनी-अपनी फोटो भेजने खींचकर हमें भेजने को कहा गया, इस संदर्भ में हमें हजारों फोटूएँ मिली है।

☆ कोरोना के चलते व्यवस्थित गीष्मकालीन शिविरों के संचालन नहीं होने पर भी इन्हें ऑनलाइन शिविरों के रूप में जयपुर, चेन्नई आदि स्थानों पर किया गया। सभी शिविरार्थियों को सुबह सामायिक करके पाटियाँ याद करने को कहा गया और शाम को ऑनलाइन कक्षाएँ लगाकर उन्हें पढ़ाया गया, ताकि दोनों क्रियाएँ अलग-अलग हो सके तथा दूर रहकर भी पढ़ाई हो सके।

☆ "विंग्स टू फ्लाई" एवं "दृष्टि" जैसी साप्ताहिक शिक्षण की व्यवस्था से सैकड़ों बच्चे एवं बड़े जुड़ने लगे हैं। वे प्रति रविवार इसका लाभ ले रहे हैं।

☆ सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं प्रोफेशनल फोरम आदि के व्याख्यानमालाओं से युवाओं को जोड़ने के भी निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। हमारे बीच इन प्रोफेशनल युवाओं की खोज एवं उनकी रूचि के अनुरूप विषयों से उनको धर्म के आधार पर जोड़ने की पहल पर पुरुषार्थ जारी है।

☆ युवक परिषद् की चेन्नई शाखा ने 12 अगस्त, 2020 को भजन संध्या का ऑनलाइन आयोजन किया, जिसमें सम्पूर्ण देश भर से 15 शाखाओं ने भाग लिया।

☆ आगमों में आयम्बिल तप का विशिष्ट स्थान है। वैश्विक महामारी में सभी के मंगल की भावना से युवक परिषद् द्वारा 05 सितम्बर से 25 अक्टूबर, 2020 के मध्य आयंबिल तपस्या की लड़ी का आयोजन चालू है, इसमें अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाएँ अपनी-अपनी भागीदारी निभा रहे हैं।

☆ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निर्देशानुसार एक बैंकाक यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता एवं सिद्धान्तशाला के अधिष्ठाता श्री दिलीपजी जैन वहाँ पधारे। वहाँ विशेष उपलब्धि के रूप में लगभग 100 परिवारों को अहिंसा व्रत अंगीकार करवाया गया।

☆ अन्य सभी कार्यक्रम गुरु भगवन्तों के शुभ आशीर्वचन स्वरूप सफल हो रहे हैं। आगे भी उनके पुण्य प्रताप से एवं अतिशय से संघ उन्नयन के प्रभावी कार्यक्रम होते रहेंगे। -अमित हीरावत, महासचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

अध्यात्म योगी आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. की असीम अनुकम्पा एवं पावन प्रेरणा से स्थापित श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मार्गदर्शन में निरन्तर पल्लवित और पुष्पित हो रहा है। पिछले 75 वर्षों से स्वाध्याय संघ अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में सामायिक-स्वाध्याय की अलख जगाने तथा स्वाध्यायियों में ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु प्रयासरत है। इस हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर, क्षेत्रीय शिविर, स्थानीय शिविर, आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसका विवरण इस प्रकार है-

☆ पर्युषण पर्व पर मार्च-2020 तक कार्यालय को 125 क्षेत्रों की मांग प्राप्त हुई, परन्तु वैश्विक कोरोना महामारी के बढ़ते संक्रमण के कारण किसी भी स्वाध्यायी भाई-बहिन को पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी सेवा के रूप में बाहर गांव जाने की अनुमति संघ की ओर से नहीं दी गई।

☆ इस वर्ष पर्युषण पर्व के अवसर पर छोटे-छोटे नियमों के तप-आराधना कार्यक्रम का एक प्रारूप बनाकर सभी स्वाध्यायी भाई-बहिनों के साथ-साथ लगभग सभी

क्षेत्रों के अध्यक्ष,मंत्री महोदय को भेजा गया, जिसमें सभी ने उत्साह से भाग लिया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कार्यालय को लगभग 800 फार्म प्राप्त हुए।

☆ स्वाध्याय संघ द्वारा द्वैमासिक स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका स्वाध्यायियों के ज्ञानवर्द्धन हेतु प्रकाशित की जाती है। अभी तक अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु-साध्वी, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन महिमा, सम्यक् चारित्र, सम्यक् तप, दान, सामायिक, स्वाध्याय, संयम, क्षमा अंक प्रकाशित हो चुके हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह महिमा अंक के रूप में शीघ्र ही प्रकाशित हो रहे हैं।

☆ विभिन्न क्षेत्रों एवं स्वाध्यायियों, संघों के अध्यक्ष, मंत्री श्रावक एवं श्राविकाओं को सामायिक-स्वाध्याय एवं व्यसन-मुक्ति की प्रेरणा देने हेतु समय-समय पर प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस बार महाराष्ट्र क्षेत्र- 31 जनवरी से 02 फरवरी, 2020 - 13 स्थानों पर, मध्यप्रदेश एवं मेवाड़ क्षेत्र- 31 जनवरी से 04 फरवरी, 2020 - 20 स्थानों पर एवं गुजरात क्षेत्र- 02 मार्च से 05 मार्च, 2020 - 17 स्थानों पर प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

☆ धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम एवं अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से अक्टुबर 2019 से जुलाई 2020 तक प्रेरणा देकर लगभग 35 नये स्वाध्यायी के फॉर्म भरवाए गए।

☆ श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 02 से 06 अक्टूबर 2019 तक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 8 के पावन सान्निध्य में स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर पाली वर्षावास में आयोजित किया गया।

☆ आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्ष एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के हीरक जयन्ति वर्ष के उपलक्ष्य पर निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें अलग-अलग विषयों पर निबन्ध प्रतियोगिता रखी गई। प्रथम विषय के अन्तर्गत ''सामायिक-स्वाध्याय के प्रेरक : आचार्य हस्ती'' रखा गया, जिसमें कार्यालय को 126 निबन्ध प्राप्त हुए। द्वितीय विषय के अन्तर्गत ''समभाव की साधना : सामायिक आराधना'' रखा गया, जिसमें 136 प्रतियोगियों ने भाग लिया। तृतीय विषय के अन्तर्गत ''मुक्ति प्रदाता : स्वाध्याय'' रखा गया, जिसमें 70 प्रतियोगियों ने भाग लिया। चतुर्थ विषय के अन्तर्गत ''आत्मशुद्धि का साधन : प्रतिक्रमण'' रखा गया।

☆ स्वाध्याय संघ कार्यालय द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित साहित्य का विक्रय भी किया गया।

☆ अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड- सभी प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों एवं शिविरों के दौरान आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देने हेतु सभी संघों एवं स्वाध्यायियों को प्रेरित किया गया। धार्मिक प्रचार-प्रसार के माध्यम से आवेदन पत्र भरवाकर बोर्ड कार्यालय को दिए।

☆ आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र- अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा संचालित पाठशालाओं का विभिन्न क्षेत्रों में निरीक्षण किया गया एवं नई पाठशालाएं प्रारम्भ करने की प्रेरणा की गई।

☆ संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा निर्देशित कार्य पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया गया।

☆ संत-सती वर्ग के अध्यापन हेतु वांछित साहित्य की व्यवस्था में भी पूर्णतः सहयोग किया गया।-सुनील संकलेचा, सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

☆ परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य गुरूदेव 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा से सितम्बर-1999 में संस्थापित होकर वर्तमान में वटवृक्ष का रूप ले रहा है। शिक्षण बोर्ड की परीक्षा सम्पूर्ण भारत देश एवं विदेशों में भी लगभग 250 केन्द्रों पर आयोजित होती है।

☆ शिक्षण बोर्ड द्वारा 1999 से आध्यात्मिक परीक्षाएँ आयोजित की जा रही हैं। जुलाई माह में कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा एवं जनवरी माह में थोकड़ों की कक्षा 1 से 11 तक की परीक्षा आयोजित की जाती है। सन् 2020 में आयोजित शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार हैं-

परीक्षा दिनांक	आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रति.	कुल केन्द्र
6 जनवरी 2020	2116	1356	1175	86.65	150

☆ विश्वव्यापी महामारी कोरोना (कोविड़-19) के संकट कारण 5 जुलाई 2020 को आयोजित होने वाली परीक्षा रद्द रखी गयी।

☆ पूज्य आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनके जीवन-दर्शन पर आधारित ग्रन्थ 'नमो पुरिसवर गंध हत्थीणं' के जीवनी खण्ड को 10 भागों में विभक्त कर ऑनलाइन मासिक परीक्षाएँ आयोजित की जा रही हैं । जीवनी के साथ ही इस परीक्षा में सामायिक प्रतिक्रमण से सम्बधित प्रश्न भी सम्मिलित किये जा रहे हैं । अब तक 8 मासिक प्रतियोगिताएँ शिक्षण बोर्ड़ द्वारा ऑनलाइन आयोजित की जा चुकी हैं।

☆ आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संघ तथा संघ की सहयोगी संस्थाओं की ओर से विविध आध्यात्मिक गतिविधियों के अन्तर्गत शिक्षण बोर्ड़ की ओर से आवश्यक सूत्र आगम की लिखित परीक्षा आयोजित की जायेगी।

☆ आवश्यक सूत्र की विषय वस्तु से सभी परीक्षार्थी भलीभाँति परिचित हो सके, इस उद्देश्य से शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्रति रविवार ऑनलाइन प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है।

☆ परीक्षार्थियों को पढ़ने में, तैयारी करने में सुविधा रहे, इस दृष्टि से नमूने का प्रश्न-पत्र भाग-अ तथा भाग- ब तैयार कर सितम्बर-2020 की जिनवाणी में

प्रकाशित करा दिया है । आवश्यक सूत्र की पुस्तकें परीक्षार्थियों के लिए 50/- में शिक्षण बोर्ड द्वारा उपलब्ध करायी जा रही हैं।

☆ शिक्षण बोर्ड द्वारा कक्षा 1 से 12 तक का क्रमबद्ध, व्यवस्थित एवं ज्ञानवर्धक पाठ्यक्रम संचालित हैं। इस पाठ्यक्रम में जहाँ नैतिक एवं व्यावहारिक मूल्यों को स्थान दिया गया, वहीं धार्मिक, आध्यात्मिक भावनाओं को जागृत करने, जैन धर्म की सभी विशेषताओं की प्रामाणिक जानकारी देने वाले सूत्र, तत्त्व, जीवनियाँ, व्रत-प्रत्याख्यानों का भी समावेश किया गया है। यह पाठ्यक्रम बच्चे-बच्चियों, युवकों-युवतियों, श्रावक-श्राविकाओं, स्वाध्यायियों, साधकों एवं विरक्त बन्धुओं आदि सभी के लिए पठनीय, मननीय एवं आचरणीय है। अंग्रेजी में कक्षा 1 से 4 तथा गुजराती में कक्षा 1 से 3 तक की पुस्तकें भी संचालित है।

☆ तत्त्वज्ञान (थोकड़ों) में रूचि रखने वाले भाई-बहिनों के लिये जैनागम स्तोक वारिधि 60 थोकड़ों का पाठ्यक्रम भी संचालित है, जिसे 5-5 थोकड़ों की एक-एक कक्षा बनाकर प्रस्तुत किया है। इस पाठ्यक्रम में ऐसे अनेक थोकड़े रखे गये हैं, जिनकी सहायता से आगम की अनेक गुत्थियों को सरलता से समझा जा सकता है। कक्षा 1 से 11 तक की पाठ्यक्रम आधारित पुस्तकें भी शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रकाशित की जा चुकी हैं। बारहवीं कक्षा का कार्य प्रगति पर है।

☆ शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन उदारमना दानदाताओं के सहयोग से करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षण बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों का पुनः मुद्रण का कार्य चलता रहता है।

☆ परीक्षा में नकल आदि रोकने हेतु निरीक्षकों की नियुक्ति की जाती है। इस बार सहयोगी संस्थाओं के सहयोग से लगभग 125 केन्द्रों पर निरीक्षकों की नियुक्ति की गई। इसके अलावा विभिन्न केन्द्रों पर सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों द्वारा, विशेष उड़न दस्ते बनाकर भी निरीक्षण किया जाता है।

☆ शिक्षण बोर्ड में कार्यरत शिक्षकों तथा प्रचारकों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में कक्षाएँ लेकर धार्मिक शिक्षण कार्य करवाया जा रहा है साथ ही प्रचार-प्रसार भी समय-समय पर होता रहता है।

☆ परीक्षा में निरीक्षक के रूप में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल तथा स्वाध्याय संघ के स्वाध्यायियों का भी पूर्ण सहयोग हमें प्राप्त हो रहा हैं।

☆ शिक्षण बोर्ड की ऑनलाइन वेबसाईट- WWW.JAINRATNABOARD.COM पर परीक्षार्थी पुस्तकें, पाठ्यक्रम, आवेदन-पत्र, वरीयता सूची आदि देख सकते हैं एवं Download कर सकते हैं। नये प्रोग्राम से परीक्षार्थी का आवेदन कम्प्यूटर में Entry करते ही उनके मोबाईल पर रोल नं. तथा परीक्षा सम्बन्धी जानकारी का मैसेज चला जाता है।-सुभाषचन्द नाहर, सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र

☆ वर्ष 2006 में संघ द्वारा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर की स्थापना की गई। प्यासा पानी के पास जाए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं किन्तु हर प्यासे तक पानी पहुंचे इस लक्ष्य से संस्कार केन्द्र गली-गली, मौहल्ले-मौहल्ले तक पहुंच रहा है। वर्तमान में मुख्यालय जोधपुर में साप्ताहिक रविवारीय संस्कार शिविरों की संख्या 30 है, जबकि दैनिक संस्कार केन्द्र 22 संचालित है, जिनमें क्रमशः 500 और 320 बालक-बालिकाएं लाभान्वित हो रहे हैं।

☆ मारवाड़, पल्लीवाल, पोरवाल सहित सम्पूर्ण राजस्थान में 47 संस्कार केन्द्रों पर लगभग 850 बालक-बालिकाओं को संस्कारित किया जा रहा है, जबकि देश भर में जलगांव (महाराष्ट्र) में 12 संस्कार केन्द्रों पर लगभग 200 बालक-बालिकाएं लाभान्वित हो रहे हैं, गुजरात क्षेत्र में 1 पाठशाला के साथ-साथ मध्यप्रदेश क्षेत्र में 2 नई पाठशालाऐं खोली गई है, जिसमें लगभग 70 छात्र-छात्राऐं लाभ ले रहे हैं। इस प्रकार जोधपुर व जोधपुर से बाहर सभी संस्कार केन्द्रों में कुल मिलाकर 84 पाठशालाओं में लगभग 1500 बालक-बालिकाएं अध्ययनरत हैं। इसके अलावा जोधपुर एवं जोधपुर से बाहर संस्कार केन्द्र खोलने के लिए प्रयास जारी है।

☆ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर के तत्वावधान में पदाधिकारियों द्वारा 10.10.2019 को आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन में पदाधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई।

☆ बारनी में महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. की प्रेरणा से नई पाठशाला शुरू की गई।

☆ संस्कार केन्द्र जोधपुर द्वारा अध्यापकों एवं निरीक्षकों की गुणवत्ता में अभिवृद्धि के लिए एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 20 अक्टूबर, 2019 को जैन भवन, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर में आयोजित की गई। कार्यशाला में जोधपुर व मारवाड़ क्षेत्र के लगभग 71 अध्यापक व 2 निरीक्षक सम्मिलित हुए।

☆ दिनांक 01.03.2020 को मुम्बई क्षेत्र में दैनिक संस्कार केन्द्र एवं रविवारीय संस्कार शिविर खोलने हेतु संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग में निम्न केन्द्रों पर संस्कार केन्द्र एवं रविवारीय संस्कार शिविर प्रारम्भ करने का आश्वासन दिया गया - 1. अंधेरी, 2. मलाड, 3. गोरेगांव, 4. विलेपार्ले, 5. भायन्दर, 6. लोखण्डवाला, 7. बोरीवली, 8. वरली व 9. घाटकोपर इत्यादि।

☆ दिनांक 02.03.2020 से 05.03.2020 तक स्वाध्याय संघ के नेतृत्व में प्रचार-प्रसार गुजरात क्षेत्र के विभिन्न शहरों/गांवों में किया गया, जिसमें

संस्कार केन्द्र के सचिव- श्री राजेश भण्डारी ने भाग लिया।

☆ संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा जोधपुर क्षेत्र के समस्त दैनिक संस्कार केन्द्र / रविवारीय शिविर में अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यांकन हेतु विधि सहित मौखिक सामायिक सूत्र परीक्षा 8 दिसम्बर, 2019 को सामायिक स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क स्थानक में आयोजित की गई, जिसमें लगभग 175 छात्रों ने में भाग लिया। वरियता सूची में स्थान पाने वाले छात्रों को प्रशस्ति पत्र के साथ 200/- रूपये का पुरस्कार दिया गया।

☆ आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा जोधपुर के 30 रविवारीय केन्द्रों पर आचार्य श्री की जीवनी के बारे में अध्यापकों द्वारा छात्र-छात्राओं को जानकारी दी गई। दिनांक 09.02.2020 को सभी रविवारीय शिविर केन्द्रों पर जीवनी पर आधारित प्रश्नोत्तरी की लिखित परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें 214 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। उत्तीर्ण छात्रों को प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गये।

☆ दैनिक संस्कार केन्द्रों में बच्चों की संख्या में वृद्धि करने के उद्देश्य से पुरस्कार व्यवस्था में परिवर्तन किया गया है। जोधपुर के दैनिक संस्कार केन्द्र पाठशाला के प्रत्येक छात्र को 1 अप्रैल 2019 से उसके दैनिक उपस्थिति पर 5/- प्रतिदिन के हिसाब से साप्ताहिक उसको रोकड़ पुरस्कार वितरित किया जा रहा है । दो माह में एक बार छात्र-छात्राओं की उपस्थिति के आधार पर एक बड़ा पुरस्कार दिया जा रहा है।

☆ जोधपुर से बाहर दैनिक संस्कार केन्द्र पाठशाला के प्रत्येक छात्र-छात्राओं को उसकी उपस्थिति के आधार पर प्रतिदिन 10/- के हिसाब से उसके बैंक अकाउन्ट में हस्तान्तरित किये जाते हैं।

☆ अध्यापकों की गुणवत्ता एवं अनुशासन में अभिवृद्धि हेतु एक नई अध्यापक नियमावली को लागू किया गया है, जिसमें धार्मिक पाठशाला एवं शिविर को किस प्रकार से सुव्यवस्थित ढंग से संचालन किया जायें जिससे पाठशाला में अनुशासन बना रहे, इसके लिए हमने 21 नियम बनाये हैं, जिसका क्रियान्वयन प्रत्येक अध्यापक द्वारा किया जा रहा है।

☆ संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा छात्र-छात्राओं में समरसता एवं धार्मिक ज्ञान में रुचि को प्रबल बनाते हुए धार्मिक पाठशालाओं में बच्चों की संख्या में बढ़ोतरी हो, इसके लिए हमने कुछ अध्यापिकाओं एवं विद्वानों की समिति बनाकर संस्कार केन्द्र के नये पाठ्यक्रम को बनाने का निश्चय किया है, इस समिति द्वारा आगे का कार्य किया जा रहा है, आगामी 4-5 माह में जल्द ही नये पाठ्यक्रम को बनाकर आपके समक्ष प्रस्तुत कर यथाशीघ्र लागू कर दिया जायेगा।

-राजेश भण्डारी, सचिव

धन्यवाद आभार

1. आचार्य श्री हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमान पुस्तक का प्रकाशनः–

आचार्यश्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा **आचार्य हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमान** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया। इस पुस्तक का लेखन संघ के वरिष्ठ श्रावकरत्न श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया। साथ ही अपने पूज्य पिताश्री संघनिष्ठ श्रावकरत्न श्री ताराचन्दजी सा मेहता (व्याकरण तीर्थ) एवं मातुश्री सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती पारसदेवीजी मेहता की स्मृति स्वरूप इस पुस्तक के प्रकाशन में श्री नौरतनमलजी, श्री कुशलचन्दजी, श्री टीकमचन्दजी, श्री राजेन्द्रजी, श्री धर्मचन्दजी, श्री विनोदजी, श्री नवनीतजी, श्री दिलखुशजी, श्री कमलेशजी, श्री योगेशजी, श्री प्रद्योतजी, श्री दर्शनजी, श्री निहारजी, श्री प्रतीकजी, श्री अंशजी, बागरेचा-मेहता परिवार ने अर्थ सहयोग प्रदान किया है, जिसके लिए बागरेचा-मेहता परिवार को संघ एवं मण्डल की ओर से हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

2. सामायिक–उपकरण के सेट में सहयोगः–

श्री एन. आर. जैन परिवार-सिवाकाशी (तमिलनाडु) द्वारा गत तीन वर्षो से श्रावकों हेतु सामायिक-उपकरण के सेट भेंट स्वरूप उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। अभी आपके परिवार द्वारा श्राविकाओं के लिए भी उपकरण के सेट भेंट स्वरूप उपलब्ध करवाये गये हैं। सिवाकाशी परिवार को संघ की ओर से हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

3. संत–सतीवृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार में विशेष सहयोगः–

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. के श्रमणोचित औषधोपचार में उपचार के दौरान अनुभवी चिकित्सकों के साथ ही डॉ. महेन्द्रजी लोढ़ा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। श्रद्धेय मुनिश्री के श्रमणोचित औषधोपचार के दौरान अखिल भारतीय श्री जैन हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जोधपुर, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-जोधपुर एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्-जोधपुर के पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ श्री सुधीन्द्रजी दुग्गड़ एवं श्री प्रवीणजी दुग्गड़ का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। सभी सहयोगी पदाधिकारी, कार्यकर्त्ताओं एवं दुग्गड़ परिवार को हार्दिक धन्यवाद।

मदनगंज-किशनगढ़ में विराजित आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा. के श्रमणोचित औषधोपचार में उपचार के दौरान अनुभवी चिकित्सकों एवं मदनगंज-किशनगढ़ संघ के श्री प्रमोदजी गौतमजी कोटेचा, श्री प्रमोदजी मोदी, श्री अरविन्दजी मोदी, श्री ताराचन्दजी झामड़, श्री नवलजी सुराणा, श्री मनीषजी डांगी, श्री पदमजी बरडिया सहित मदनगंज-किशनगढ़ के श्रावक- श्राविकाओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। सभी सहयोगी पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं को हार्दिक धन्यवाद।

तपस्या की अनुमोदना

पीपाड़शहर– अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा बुधवार, 16 दिसम्बर, 2020 को तपस्विनी बहन श्रीमती बिन्दुजी मेहता सुपुत्री श्री भागचन्दजी-बीनाजी मेहता, जोधपुर की तपस्या के उपलक्ष्य में अनुमोदना का कार्यक्रम वेबिनार के माध्यम से रखा गया। श्राविका मण्डल की महासचिव ने उपस्थित पदाधिकारियों एवं श्राविकाओं का स्वागत करते हुए वेबिनार का शुभारम्भ किया। वेबिनार के माध्यम से श्राविका संघ द्वारा अनुमोदनार्थ आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती सुशीलाजी सुराणा-ब्यावर, श्रीमती धनवन्तीजी चौधरी-धुलिया, श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, श्रीमती मधुजी सुराणा-चेन्नई, श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता-बैंगलोर, श्रीमती सुशीलाजी भण्डारी-रायचूर, श्रीमती सुशीलाजी भण्डारी-बैंगलुरु, श्रीमती श्वेताजी कर्णावट-जोधपुर, श्रीमती विनीताजी कांकरिया-जोधपुर, श्रीमती रेखाजी सुराणा-जोधपुर, श्रीमती सुमनजी सिंघवी-जोधपुर, श्रीमती प्रभाजी गुलेच्छा-बैंगलुरु, श्रीमती जयाजी गोखरू-मुम्बई, श्रीमती मीनाक्षीजी जैन-अजमेर, श्रीमती लवीनाजी चौपड़ा-जोधपुर, श्रीमती विमलाजी भण्डारी-जोधपुर आदि ने अपने व्यक्तव्य गीतिका एवं भजनों के माध्यम से तपस्या की अनुमोदना की। श्रीमती बीनाजी मेहता ने गुरुदेव के उपकारों का स्मरण करते हुए श्राविका मण्डल को धन्यवाद दिया एवं कहा कि आप सभी के आशीर्वाद एवं शुभकामनाओं से बिन्दु की तपस्या आगे भी निरन्तर सुखपूर्वक गतिमान रहेगी। मास्टर डूग्गू ने भी अपनी मातुश्री की तपस्या की अनुमोदना में गीत प्रस्तुत किया। अंत में सभी श्राविकाओं ने एक स्वर में तपस्या की अनुमोदना की तथा श्रीमती मंजूजी भण्डारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस वेबिनार में लगभग 130 श्राविकाओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन श्राविका संघ की महासचिव श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया-अजमेर ने किया।-अलका दुधेड़िया

गुरु हीरा के प्रति तपस्विनी बहन बिन्दू की भावाभिव्यक्ति

पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आयु का 82 वां वर्ष चल रहा है, उनके अनन्त उपकारों के प्रति कृतज्ञता एवं आभार ज्ञापित करने के लिये तपस्विनी बहन बिन्दु ने आचार्य भगवन्त के श्रीचरणों में उपस्थित होकर 20 दिसम्बर को 82 उपवास की भेंट समर्पित कर श्रद्धाभिव्यक्ति की, जो इस प्रकार हैं-

छोड़ दे चिंता आज, गुरु हीरा बैठे हैं,
तू हिम्मत ना हार, गुरु हीरा बैठे हैं,
ना होगी तेरी हार, गुरु हीरा बैठे हैं, छोड़ दे चिंता....... ।। टेर।।
सुख-दुःख है जीवन की छाया, इसमें किसी का जोर नहीं,
तुझको बचाके रखलेंगे जो, गुरु हीरा बिना कोई और नहीं,
देने को आशीर्वाद तेरे लिए तैयार, गुरु हीरा बैठे हैं, छोड़ दे चिंता..... ।। 1 ।।
दर-दर पर क्यों माथा ठेके, एक पे क्यूँ एतबार नहीं,
ऐसा कोई सपना नहीं जो, होता यहाँ साकार नहीं,
क्यों सोचे बेकार, गुरु हीरा बैठे हैं, छोड़ दे चिंता.......... ।। 2 ।।

पग-पग तेरे साथ गुरु हीरा, तेरा साथ निभाएगें,
जब डोलेगी जीवन नैया तो, मांझी बन जाएगें,
थाम तेरी पतवार, गुरु हीरा बैठे हैं, छोड़ दे चिंता......... ।। 3 ।।
थाम के अंगुली हीरा गुरु की, तप की राह पर बढ़ती चल,
थाम के अंगुली महेन्द्रमुनि की, तप की राह पर चलती चल,
छोड़ दे इनपे वो देखेंगे, क्या होना है तेरा कल,
देने को पच्चखाण, अरे होगा बेड़ा पार, गुरु हीरा बैठे हैं, छोड़ दे चिंता.. ।। 4 ।।

आज दिनांक 15 जनवरी, 2021 को तपस्या रूपी मोती की माला पंचपरमेष्ठी के 108 गुणों को पूरा करने के उपलक्ष्य में गुरुभक्ति का कार्यक्रम पीपाड़ शहर के तत्त्वावधान में मेहता परिवार द्वारा रखा गया। इस अवसर पर ब्यावर एवं भोपालगढ़ श्राविकामण्डल भी उपस्थित रहा। तपस्विनी बहन बिन्दू ने इसी दिन आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से 108 में 5 मिलाकर 113 के प्रत्याख्यान ग्रहण किये।

पीपाड़शहर– श्री जैन रत्न युवक परिषद् पीपाड़ शहर की 17 नवम्बर, 2020 को आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से श्री अक्षयजी जैन को अध्यक्ष (83870-15058, 91662-93218), श्री हर्षजी भण्डारी को उपाध्यक्ष, श्री अखिलजी लुणावत को मंत्री (80001-36342, 90798-40349), श्री रितिकजी मुथा को सहमंत्री एवं श्री शुभमजी चौधरी को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। नव-मनोनीत पदाधिकारियों को संघ की ओर से हार्दिक बधाई।

पीपाड़शहर– पीपाड़ की श्राविकारत्न श्रीमती अंशिमा जी भण्डारी (सी.ए.) धर्मपत्नी

श्री सौरभजी भण्डारी (सी.ए.) ने 22 दिसम्बर, 2020 को सम्पन्न हुए दीक्षान्त समारोह में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय-उदयपुर से ''मास्टर ऑफ कॉमर्स (एकाउण्ट्स)'' में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। श्रीमती अंशिमाजी पीपाड़ के धर्मनिष्ठ कर्तव्यपरायण श्रावकरत्न श्री दिलीपजी-उषाजी भण्डारी की पुत्रवधू हैं एवं वर्तमान में आप आई.सी. आई.सी.आई. बैंक-राजकोट में मैनेजर पद पर कार्यरत है। संघ की ओर से हार्दिक बधाई।-नमन मेहता

श्रद्धांजलि

जोधपुर– धर्मनिष्ठ, संघ-सेवी सुश्रावक श्री रमेशजी मेहता सुपुत्र स्व. श्री सुमेरसिंहजी

मेहता का 62 वर्ष की आयु में 03 नवम्बर, 2020 को देवलोकगमन हो गया। आपका प्रामाणिक जीवन सहजता, सरलता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप अपने पीछे धर्मसहायिका श्रीमती मधुजी मेहता, सुपुत्र श्री नीरजजी मेहता एवं सुपुत्री श्रीमती रुचिजी भण्डारी का भरापुरा परिवार छोड़कर गए हैं। आप विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. के सांसारिक भतीजे थे।-चन्द्रप्रकाशजी मेहता

जोधपुर– धर्मपरायणा श्रीमती प्रसन्नकंवरजी मेहता धर्मसहायिका स्व.श्री सरदारसिंह जी मेहता (पुत्रवधू स्व. श्री गणपतसिंहजी मेहता 'एडवोकेट') का 75 वर्ष की आयु में

09 नवम्बर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आप कर्तव्यपरायण, उदारता, आत्मीयता, विनम्रता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से सम्पन्न कुशल गृहिणी थी। आप अपने पीछे दो सुपुत्र श्री धर्मेन्द्रसिंहजी एवं श्री संजीवसिंहजी एवं सुपुत्री श्रीमती मधुजी चौपड़ा का भरा पूरा परिवार छोड़ कर गई है। आप विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. की सांसारिक भाभीजी थीं।-चन्द्रप्रकाशजी मेहता

मसूदा (अजमेर)– धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सम्पतराजजी ललवाणी सुपुत्र श्री सोहनलालजी ललवाणी का जोधपुर में 12 नवम्बर, 2020 को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित 8 से 10 सामायिक प्रतिदिन करते थे। आपने अपने जीवन में अनेकों व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आप समय-समय पर गुरु-दर्शन-वंदन का लाभ लेते रहते थे। आप अपने पीछे भ्राता श्री उमरावसिंहजी एवं दो सुपुत्र श्री सिंहराज- श्रीमती सुधाजी, श्री निर्मलजी-श्रीमती ललिताजी ललवाणी एवं दो सुपुत्रियाँ श्रीमती मीनाक्षी लोढ़ा एवं श्रीमती मधुजी गेलड़ा सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

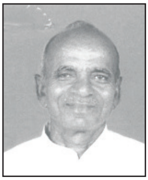

जोधपुर– अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्रावक श्री लखतपराजजी चौपड़ा का 11 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित समस्त संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आप नियमित रूप से सामायिक व्रत की आराधना करने के साथ समय-समय पर प्रवचन-श्रवण एवं दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त करते थे। आपका परिवार संघ द्वारा संचालित गतिविधियों में सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहा है। आप सेवा के कार्यों में सदैव अग्रणी रहे हैं। आप परम पूज्य उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक भानजे थे। कुछ दिन पूर्व ही आपके बड़े भ्राता श्री प्रकाशजी चौपड़ा का भी देहावसान हो गया था।

जोधपुर– अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी सुश्रावक श्री देवरूपजी मेहता का 13 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी आचार्य हस्ती-हीरा-मान के प्रति अनन्य आस्था एवं श्रद्धाभक्ति थी। आप एवं आपका पूरा परिवार संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहता है। आपके लघु भ्राता श्री मनीषजी मेहता संत-सतीवृन्द के आहार-विहार एवं गौचरी आदि की सेवाओं में सक्रिय रूप से सेवाएँ प्रदान करते हैं। संघ द्वारा संचालित गतिविधियों से आपका परिवार जुड़ा हुआ है।

जबलपुर– अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी श्राविकारत्न श्रीमती शकुनदेवीजी बाघमार धर्मसहायिका श्री मदनलालजी बाघमार का 16 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आपकी परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली श्राविकारत्न थी। जबलपुर

में साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के चातुर्मास में आप सहित आपके सम्पूर्ण परिवार ने धर्मध्यान का अपूर्व लाभ प्राप्त किया। आपके धर्मसहायक श्री मदनलालजी बाघमार श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जबलपुर शाखा के अध्यक्ष पद के दायित्व को बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। संघ की सभी गतिविधियों में बाघमार परिवार सदैव समर्पित है। आपके सुपुत्र श्री हितेश जी बाघमार श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सचिव के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आपके चारों सुपुत्र श्री राजेशजी, श्री रूपेशजी, श्री मुकेशजी एवं श्री हितेषजी बाघमार संघ सेवा से जुड़े हुए हैं।

भोपाल– धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री अशोकजी नाहर सुपुत्र वरिष्ठ श्रावक श्री नेमीचन्दजी

नाहर का 25 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। आप तपस्वी श्रावक रत्न थे। आप प्रतिदिन दो-तीन सामायिक व्रत की आराधना करते थे। प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में अठाई रात्रिभोजन के त्याग के साथ प्रत्येक चतुर्दशी पर उपवास की आराधना करते थे। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित समस्त संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। वरिष्ठ श्रावकरत्न श्री घेवरचन्दजी नाहर आपके बड़े पिताजी थे।

कानपुर– अनन्य गुरुभक्त संघसेवी, सुश्राविका श्रीमती कंचनदेवीजी बाफना धर्म

सहायिका श्री मनमोहनचन्दजी बाफना के 26 दिसम्बर, 2020 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्राविकाजी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा था। आपकी परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविकारत्न थी। आपके धर्मसहायक श्रावकरत्न श्री बाफना साहब अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्वी भारत सम्भाग के क्षेत्रीय प्रधान पद का दायित्व बखूबी निर्वहन के साथ ही संघ व संघीय संस्थाओं को सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। संघ-सेवा, समाज-सेवा, संत-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में बाफना परिवार सदैव समर्पित है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में भी बाफना परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है।-प्रकाश सालेचा

बैंगलोर– अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्राविका श्रीमती सुरजीदेवीजी आबड़ धर्म-

सहायिका श्री प्रकाशचन्दजी आबड़ का 31 दिसम्बर, 2020 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। सबकी प्रियपात्र होने के साथ ही आपके चेहरे पर सदा शांति-सौम्यता सदैव झलकती रहती थी। संत-सतीवृन्द की सेवा, स्वधर्मी भाई-बहिनों

के आतिथ्य-सत्कार एवं रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में आप ही नहीं पूरा आबड़ परिवार सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। आप मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म. सा. की सांसारिक भाभीजी थी।-धनपत सेठिया

कोयम्बटूर– अनन्य गुरुभक्त संघसेवी, सुश्रावक श्री सोनराजजी बाघमार का 02 जनवरी, 2021 को स्वर्गगमन हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं विविध गुणों से युक्त सुश्रावकजी का जीवन संघ व समाज-सेवा में समर्पित रहा। आपकी आचार्य हस्ती-हीरा-मान के प्रति अनन्य आस्था एवं श्रद्धाभक्ति थी। आप एवं आपका पूरा परिवार संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहता है। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। सम्पूर्ण बाघमार परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी बाघमार परिवार सदैव समर्पित है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में बाघमार परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है।

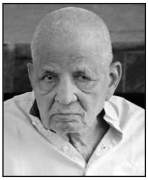

गोटन– अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्राविका श्रीमती सीतादेवीजी ओस्तवाल धर्मसहायिका श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल का 08 जनवरी, 2021 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य हस्ती-हीरा-मान के प्रति अनन्य आस्था एवं श्रद्धाभक्ति थी। आप एवं आपका पूरा परिवार संत-सतीवृन्द की सेवा में सदैव तत्पर रहता है। वे समय-समय पर गुरुभगवन्तों के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त करती थी। गोटन में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में वे सक्रिय थी। आपके धर्मसहायक श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल तथा आपके सुपुत्र श्री नवरतनजी ओस्तवाल दोनों ने ही श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन के मंत्री पद का दायित्व बखूबी निर्वहन किया। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में ओस्तवाल परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो रहा है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

50000/-श्री पारसमलजी चोरडिया परिवार, उज्जैन, विहार सेवा हेतु।

21000/- श्री महेन्द्रकुमारजी मोहनलालजी कटारिया परिवार 'पीपाड़ वाले', नागपुर, संघ सहायतार्थ।

11000/-श्री रूपकुमारजी, मोहनराजजी, मदनराजजी, धर्मेशकुमारजी चौपड़ा 'कवास वाला' पाली-जोधपुर-बालोतरा-सूरत, संघ सहायतार्थ।

5100/- श्री प्रभुचन्दजी अबानी सुपुत्र स्व. श्री चंचलचन्दजी अबानी, जोधपुर, सुश्री तनवी मेहता व श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती पुष्पकंवरजी मेहता, मनीषजी मेहता, जोधपुर, श्रावकरत्न श्री देवरूपजी मेहता की पुण्यस्मृति में संघ सहायतार्थ।

2100/- श्री राजेशचन्दजी विजयकुमारजी लुणावत 'आचीणा वाले', इन्दौर, श्रावकरत्न

श्री त्रिलोकचन्दजी लुणावत की पुण्यस्मृति में संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री सिद्धराजजी, निर्मलकुमारजी ललवाणी, मसूदा-अजमेर, सुश्रावक सेठसाहब श्री सम्पतराजजी ललवाणी के 12 नवम्बर, 2020 को देहावसान होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

500/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मपत्नी स्व. श्री कंवलराजजी मेहता, जोधपुर, जीव दया हेतु।

500/- श्री अर्जुनराजजी मेहता, जोधपुर, रत्नम् पत्रिका सहायतार्थ।

अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल को प्राप्त साभार

100000/-श्री एस. प्रतापचन्दजी बैद, चेन्नई, अपनी दोनों सुपौत्रियों सुश्री मेघाजी एवं सुश्री त्रिशलाजी बैद के दीक्षा के उपलक्ष्य में।

5100/- श्रीमती मंजूजी भण्डारी, बैंगलोर, दीक्षा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में।

3500/- श्रीमती सुशीलाजी भण्डारी, रायचूर, वेबीनार पर आयोजित भजन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को पारितोषिक देने हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

51000/- श्री मोफतराजजी, परागजी मुणोत, मुम्बई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

51000/- श्री प्रमोदजी, अंकितजी लोढ़ा, जयपुर, शिक्षा निधि स्तम्भ सदस्यता हेतु।

21000/- श्री हीरालालजी मंडलेचा, जलगांव, स्वाध्याय निधि पोषक सदस्यता हेतु।

21000/- प्रकाशमल दुग्गड़ चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई, स्वाध्याय निधि पोषक सदस्यता हेतु।

11111/- श्री गौतमजी एस. मेहता, मुम्बई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

11000/- श्री विजयजी गादिया, भुसावल (महा.),स्व. श्री भंवरीलालजी हीरालालजी गादिया 'भुसावल वालों' की पावन स्मृति में।

11000/- श्री संदीपकुमारजी जैन, चेन्नई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

11000/- श्री पुखराजजी, चंचलजी गिड़िया, जोधपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

11000/- श्री सोहनलालजी, उम्मेदराजजी हुण्डीवाल, चेन्नई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

11000/- श्री गौतमराजजी, राजेशजी सुराणा, चेन्नई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री जगदीशराजजी, कपिलजी, गौरवजी जैन, कोटा, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री शांतिलालजी, अक्षयजी बाफना, सूरत, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री लक्ष्मीनारायणजी, राकेशजी, शुभमजी जैन, सुमेरगंज मण्डी, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री अनिलजी सोहनलालजी बोथरा, जलगांव, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री महावीरजी सोहनलालजी बोथरा,जलगांव, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री राजेन्द्रजी पुखराजजी कोठारी, मुम्बई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री रिखबराजजी, राहुलजी, रविजी, राजजी छाजेड़, मुम्बई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री कन्हैयालालजी, पुखराजजी, पंकजजी, दिलीपजी जैन 'पहुना वाले', भीलवाड़ा, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री अमरचन्दजी, राजेशजी जैन, मुम्बई, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5100/- श्री सुभाषचन्दजी, प्रवीणजी, रविन्द्रजी, संदीपजी, लक्ष्यजी हुण्डीवाल (कांकरिया), जोधपुर, स्वाध्याय निर्देशिका विज्ञापन हेतु।

5000/- श्री महेन्द्रकुमारजी मोहनलालजी कटारिया परिवार 'पीपाड़ वाले', नागपुर, संघ सहायतार्थ।

2100/- श्री राजुलालजी अनोखचन्दजी जैन 'श्यामपुरा वाले', जलगांव (महा.), चि. सौरभ का शुभविवाह सौ. का स्वाति जैन के संग 07 दिसम्बर, 2020 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री सुनीलजी बोहरा, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा, जोधपुर, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, जोधपुर, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्रीमती चेतना भोजराजजी बोथरा, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री प्रकाशमलजी, पुखराजजी कोठारी, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री विशाल प्रकाशजी मुणोत, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री गजेन्द्रजी आर. अंबानी, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री श्रीपतजी गोखरू, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्री प्रवीणजी कर्नावट, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्रीमती इन्दुजी कमलेशजी मुणोत, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

2100/- श्रीमती ताराबाईजी ताराचन्दजी खिंवसरा, मुम्बई, वार्षिक सदस्यता हेतु।

1100/- श्री दिलखुशराजजी मेहता, मुम्बई, सहयोगार्थ।

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

5000/- श्री महेन्द्रकुमारजी मोहनलालजी कटारिया परिवार 'पीपाड़ वाले', नागपुर, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री दिलखुशराजजी मेहता, मुम्बई, सहयोगार्थ। (दिसम्बर-2020)

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र को प्राप्त साभार

5000/- श्री महेन्द्रकुमारजी मोहनलालजी कटारिया परिवार 'पीपाड़ वाले', नागपुर, संघ सहायतार्थ।

गजेन्द्रनिधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

(माह दिसम्बर-2020 एवं जनवरी-2021 के लाभार्थी)

100000/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरुपार्क, जोधपुर, सहयोगार्थ

50000/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मपत्नी स्व. श्री कस्तूरमलजी सांड, अजमेर, सहयोगार्थ।

24000/- श्री श्रीपालजी सुराणा, किलपॉक, चेन्नई, सहयोगार्थ।

21000/- श्री हेमन्तजी सिंघवी,चारनी रोड़, मुम्बई, सहयोगार्थ।

12000/- श्री विपिनजी विजयराजजी बाफना, थाणे (महा.), सहयोगार्थ।

11000/- श्री रविन्द्रजी जैन, सवाईमाधोपुर, श्री जगदीशजी जैन की पुण्यस्मृति में।

रत्नम् पत्रिका पर अभिमत

आज संघ पत्रिका रत्नम् के दिसम्बर-2020 के अंक को पढ़कर बहुत ही खुशी हुई। वास्तव में इसे पढ़कर लगा कि इसमें दिए हुए समाचार एवं श्रद्धांजलि के शब्द बहुत ही सरल एवं सटीक है। यह पहली बार हुआ है कि रत्नम् पत्रिका में फोटो सहित श्रद्धाजंलि प्रकाशित हुई है। शासनसेवा समिति के संयोजक एवं प्रबुद्ध जीवदया प्रेमी स्व. श्री रतनलालजी सी. बाफना के श्रद्धांजलि को पढ़ते हुए लगा कि वो व्यक्तित्व मेरे सामने ही बैठा है। सभी समाचारों की भाषा एवं प्रस्तुति बहुत ही संजीदा है। रत्नम् पत्रिका और आगे बढ़े और सबके लिए लाभप्रद हो, इसी शुभकामना एवं बधाई के साथ।

-दिलीप जैन, अधिष्ठाता, श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (राज.)

आगामी पर्व

पौष शुक्ला 8	गुरुवार	21.01.2021	अष्टमी
पौष शुक्ला 14	बुधवार	27.01.2021	चतुर्दशी एवं पक्खी पर्व। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 111 वां जन्मदिवस
माघ कृष्णा 8	शुक्रवार	05.02.2021	अष्टमी
माघ कृष्णा 14	बुधवार	10.02.2021	चतुर्दशी
माघ कृष्णा 30	गुरुवार	11.02.2021	पक्खी पर्व
माघ शुक्ला 8	शनिवार	20.02.2021	अष्टमी
माघ शुक्ला 14	शुक्रवार	26.02.2021	चतुर्दशी एवं पक्खी पर्व

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

संघ सम्बन्धी नवीनतम जानकारी हेतु डाउनलोड करें

रत्नसंघ

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

एप् में अपनी प्रोफाईल अवश्य अपडेट करें

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित, सम्पादक-प्रकाश सालेचा एवं इण्डियन मैप सर्विस, सेक्टर-जी, राममन्दिर के पास, शास्त्रीनगर, जोधपुर से मुद्रित

Contact No. 0291-2636763, 94610-26279 (WhatsApp)
Website- www.ratnasangh.com, Email : ratnasangallindia@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई